## Lecture-1

## Chandragupt Natak ka Kathanak
## चन्द्रगुप्त नाटक का कथानक

चंद्रगुप्त (सन् 1931 में रचित) हिन्दी के प्रसिद्ध नाटककार जयशंकर प्रसाद का नाटक सर्वश्रेष्ठ नाटकों में से एक है। इसमें विदेशियों से भारत का संघर्ष और उस संघर्ष में भारत की विजय गाथा को मुख्य विषय के रूप में प्रस्तुत की गई है। चंद्रगुप्त नाटक जयशंकर प्रसाद की ऐतिहासिक चेतना का सफल निदर्शन है।

प्रसाद जी के मन में भारत की गुलामी को लेकर गहरी व्यथा थी। इस ऐतिहासिक प्रसंग के माध्यम से उन्होंने अपने इसी विश्वास को वाणी दी है। शिल्प की दृष्टि से इसकी गति अपेक्षाकृत शिथिल है। इसकी कथा में वह संगठन, संतुलन और एकान्तता नहीं है, जो स्कंदगुप्त में है। अंक और दृश्यों का विभाजन भी असंगत है। चरित्रों का विकास भी पर्याप्त नहीं हो पाया है। फिर भी 'चंद्रगुप्त' हिंदी की एक श्रेष्ठ नाट्यकृति है, प्रसाद जी की प्रतिभा ने इन त्रुटियों को ढंक दिया है। 'चंद्रगुप्त' जयशंकर प्रसाद जी द्वारा लिखित नाटक है जो हिंदी-साहित्य के क्षेत्र में बहुत ही चर्चित पुस्तक है। यह नाटक मौर्य साम्राज्य के संस्थापक 'चंद्रगुप्त मौर्य' के उत्थान की कथा नाट्य रूप में कहता है। यह नाटक 'चंद्रगुप्त मौर्य' के उत्थान के साथ-साथ उस समय के महाशक्तिशाली राज्य 'मगध' के राजा 'धनानंद' के पतन की कहानी भी कहता है। यह नाटक 'चाणक्य' के प्रतिशोध और विश्वास की कहानी भी कहता है। यह

नाटक राजनीति, कूटनीति, षडयंत्र, घात-आघात-प्रतिघात, द्वेष, घृणा, महत्वकांक्षा, बलिदान और राष्ट्र-प्रेम की कहानी भी कहता है। यह नाटक ग्रीक के विश्वविजेता सिकंदर या अलेक्सेंडर या अलक्षेन्द्र के लालच, कूटनीति एवं डर की कहानी भी कहता है। यह नाटक प्रेम और प्रेम के लिए दिए गए बलिदान की कहानी भी कहता है। यह नाटक त्याग और त्याग से सिद्ध हुए राष्ट्रीय एकता की कहानी भी कहता है। चंद्रगुप्त और चाणक्य के ऊपर कई विदेशी और देशी लेखकों ने बहुत कुछ लिखा है। अलग-अलग प्रकार की कहानियाँ और उनसे निकलने वाला अलग-अलग प्रकार का निचोड़ मन में भ्रम पैदा करने के लिए काफी है लेकिन यह नाटक सभी पुस्तकों से कुछ भिन्न है। जो पाठक इस नाटक को पढ़ना चाहते हैं उनके लिए महत्वपूर्ण सलाह यह है कि नाटक से पहले इसकी भूमिका जरूर पढ़े। जयशंकर प्रसाद जी ने इस नाटक की भूमिका लिखने के लिए जिस प्रकार का शोध किया है वह काबिलेतारिफ है जबकि मुझे लगता है कि तारीफ के लिए शब्द ही नहीं है। लगभग सभी देशी और विदेशी लेखकों के पुस्तकों से महत्वपूर्ण बिन्दुओं को उठाकर उन्होंने चंद्रगुप्त के जन्म से लेकर उसके राज्याभिषेक तक की गतिविधियों को अलग-अलग रूप से प्रस्तुत किया है। इस नाटक की भूमिका ही अपने-आप में शोधपत्र से कम नहीं है। जो इतिहास का पोस्टमॉर्टम उन्होंने अपनी इस भूमिका में देशी-विदेशी इतिहासकार द्वारा लिखित पुस्तकों का अध्ययन करके, सभी का